प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 प्रदान किए गए

साहित्यकारों के सामने हिंसा एक बड़ी चुनौती – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

नई दिल्ली, 22 फ़रवरी 2017 । साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 आज एक भव्य समारोह में 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को प्रदान किए गए। कमानी सभागार में आयोजित इस पुरस्कार अर्पण समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात भौतिकविज्ञानी एवं मराठी लेखक डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर थे। पुरस्कार साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा दिए गए। समारोह का आरंभ वैष्णवी द्वारा वंदना गायन के साथ हुआ। उसके बाद साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी का औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की उपलब्धियों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया। प्रशस्ति पत्र का वाचन भी सचिव, डॉ. के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अकादेमी के इस मंच पर 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों के रूप में पूरा देश उपस्थित है। उन्होंने पुरस्कृत लेखकों को बधाई देते हुए कि मैं पुरस्कार की जगह सम्मान कहना अधिक पसंद करता हूँ क्योंकि पुरस्कार में कहीं–न–कहीं धन की गंध आती है। उन्होंने पूरी दुनिया में व्याप्त हिंसा पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए लेखकों से उसके विरोध में खड़े होने की अपील की। उन्होंने लेखकों से कहा कि लेखकों को साहित्य अपना प्रभाव छोड़ने में असक्षम क्यों हो रहा है पर भी विचार करना चाहिए। आत्मकेन्द्रित न होना और विनम्र होना यह एक अच्छे साहित्यकार के लिए जरूरी गुण होने चाहिए। श्रेष्ठ लेखक वही होता है जो अपने से परे को स्वीकृति देता है। समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर ने कहा कि मैं वर्तमान जीवन में विज्ञान की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करने के लिए साहित्यकारों को एक बड़ी भूमिका निभानी होगी। उन्होंने अपने शिक्षक फ्रेड हॉयल तथा प्रसिद्ध अंग्रेज़ी लेखक ई.एम. फॉस्टर के साथ बिताये अपने संस्मरणों के आधार पर कहा कि वैज्ञानिक अपने विचारों को साहित्य के रूप में ढालकर ही आम जनता तक पहुँचा सकता है।

समारोह में डोगरी, अंग्रेज़ी, संस्कृत एवं सिन्धी के पुरस्कृत लेखक शामिल नहीं हो सकें। पुरस्कार अर्पण समारोह के अंत में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चन्द्रशेखर कम्बार ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन संध्या पुरेचा द्वारा भरतनाट्यम नृत्य की प्रस्तुति से हुआ।

साहित्योत्सव के दूसरे दिन का प्रारंभ मातृभाषा संरक्षण संगोष्ठी के द्वितीय सत्र से हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखक एवं विद्वान प्रो. इन्द्रनाथ चौधुरी ने की तथा राहुल देव, चंद्रप्रकाश देवल और अनीसुर रहमान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात राजस्थानी साहित्यकार चंद्रप्रकाश देवल ने की। साथ ही, वासदेव मोही तथा सा. कंदासामी ने अपने विचार प्रकट किए।

'लेखक से भेंट' श्रृंखला के अंतर्गत अपराह्न 2.30 बजे प्रख्यात भारतीय अंग्रेजी लेखिका रूपा बाजवा ने श्रोताओं से अपनी लेखन प्रक्रिया को लेकर बातचीत की और श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए।